बाइबल टीचर

वर्ष 19 | अप्रैल 2022 | अंक 5

सम्पादकीय

धार्मिक पदवियां

मनुष्य शायद यह भूल जाता है कि वह कुछ भी नहीं है। कई लोग ऐसा सोचते हें कि हम बहुत पैसे वाले हैं या हम बहुत प्रसिद्ध है। लोग हमारी वाह! वाह! करते हैं तथा कई बार दिमाग यहां तक चला जाता है कि हमारे से बढ़िया कोई नहीं है। मेरे दोस्त आपको यह समझना चाहिए कि आप कुछ भी नहीं है। आप मिट्टी हैं तथा कुछ ही क्षणों में मिट्टी में मिल जाते हैं। बाइबल बताती है कि आदम की तरह मनुष्य मिट्टी से बना है और एक दिन मिट्टी में मिल जाता है। (सभोपदेशक 12:7)।

आज मसीहीयत में भी एक बात देखने को मिलती है कि कुछ लोग अपने को बहुत बड़ा बनाकर दूसरों के सामने पेश करते हैं। बात तो यह है कि कुछ वर्षों पहिले जब साम्प्रदायिक कलीसियाएं पनप रही थी तब कुछ लोगों ने अपने-अपने तरीकों से मसीहीयत को पेश किया। कुछ ऐसे धार्मिक अगुवे थे जिन्होंने बाइबल को तो ताक पर रख दिया जो कि आज भी हो रहा है तथा अपनी बनाई हुई शिक्षाओं को लोगों पर थोपने लगे। यीशु ने ऐसे लोगों के विषय में कहा था कि यह "मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।" (मत्ती 15:9)। इस प्रकार के धार्मिक अगुवे अपनी बाइबल का अध्ययन तो करते नहीं है परन्तु जो बातें उन्हें सैमीनरी में सिखाई जाती है तथा वे वो ही करना चाहते है जो उनकी कलीसिया द्वारा आज्ञा दी जाती है। बहुत से प्रचारक भिन्न-भिन्न प्रकार के चोगे पहिनते हैं और यह इसलिये है क्योंकि उनको ऐसा सिखाया जाता है और बताया गया है कि तुम बड़े विशेष तथा स्पेशल हो। मसीह ने कभी भी इस प्रकार की शिक्षा नहीं दी। उसने तो बल्कि इन बातों के बारे में अपने दिनों में फरीसी और सदूकी लोगों को उलहाना दी थी। क्योंकि वे सोचते थे कि हम तो गुरूजी है इसलिये हमें सलाम करो और हमारी बढ़ाई करो। परन्तु यीशु का स्वभाव ऐसा नहीं था क्योंकि उसने कभी अपनी बढ़ाई नहीं चाही बल्कि अपने चेलों के पांव भी धोये थे। बाइबल कहती है जैसा "यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी हो।" (फिलि. 2:5)। मेरे मित्र, यदि आपका स्वभाव यीशु जैसा है तो आप अपने आपको दूसरों के सामने बड़ा नहीं बनायेंगे। बाइबल कहती है, "आपस में एक सा

मन रखो; अभिमानी न हो, परन्तु दीनों के साथ संगति रखो, अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो" (रोमियों 12:16)। परन्तु अक्सर देखा जाता है कि अगुवे यह सोचते हैं कि मेरे से अधिक कोई बुद्धिमान नहीं है। और मेरे अलावा कोई दूसरा बाइबल सीखा ही नहीं सकता।

आइये कुछ ऐसे नामों को देखें जिन्हें लोग अपने नामों के साथ जोड़ते हैं ताकि उन्हें आदर सम्मान मिले। यह ऐसी पदवियां हैं जो धार्मिक रूप से धार्मिक अगुवे अपने नाम के आगे लगाते हैं।

हम देखते हैं कि कुछ लोग अपने नाम के आगे "रैवरण्ड" लगाते है। यदि आप उन्हें रैवरण्ड न बोले तो वे बुरा मान जाते हैं। कई अपने को राइट रैवरन्ड तक भी कहते हैं परन्तु ये शब्द बाइबल में एक ही बार आया है यानि अंग्रेजी की बाइबल (OLD KJV), में भजन 111:9 में लिखा है कि रैवरन्ड नाम केवल परमेश्वर का है, और इस शब्द का अर्थ है "भय योग्य" यानि जिससे भय खाया जाये। मैं पूछता हूं कि जो अपने को रैवरन्ड कहते हैं क्या वे परमेश्वर के तुल्य हैं? ऐसे लोगों को परमेश्वर से डरना चाहिए।

आज बहुत सारे धार्मिक अगुवे अपने को फादर कहलाना पसंद करते हैं। यानि धार्मिक पिता और यह बात बाइबल के बिल्कुल विरूद्ध है। कई तो इस बात से सन्तुष्ट नहीं होते और वे चाहते हैं कि लोग उन्हें हॉली फादर कहें। यदि आपने इन्हें मिस्टर या ब्रदर कह दिया तो वे बहुत बुरा मान जाते हैं। इन लोगों को यीशु की वो बात याद दिलानी चाहिए, जब यीशु ने कहा था, "पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।" (मत्ती 23:9)। बड़े ही दुख की बात है कि लोग सीधे परमेश्वर के वचन का विरोध कर रहे हैं।

यीशु ने ऐसा कहा था, "कि वे तुम से जो कुछ कहे वह करना, और मानना; परन्तु उनके जैसे काम मत करना। यीशु ने कहा कि ये लोग कहते तो हैं पर करते नहीं। यह लोगों पर भारी बोझ डालते हैं; खुद तो उठाते नहीं, परन्तु बांधकर मनुष्यों के कंधों पर रखते हैं, और अपनी उंगली से सरकाते भी नहीं। वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिये करते है। वे अपने चोगों को चौड़ा करते हैं, बड़े-बड़े चोगे पहिनते हैं। सभाओं में उन्हें बैठने के लिये बढ़िया और मुख्य स्थान चाहिए। बजारों में लोग उन्हें देखकर सलाम करें तथा उनके सामने झुकें तथा उसने कहा था कि तुम उनके जैसे मत बनना क्योंकि तुम्हारा पिता परमेश्वर एक है और तुम्हारा एक ही गुरू है। तुम आपस में भाई हो" (मत्ती 23) मित्रो यह सब जानने के बाद भी क्या अभी भी आपको कोई संदेह है कि एक धार्मिक अगुवे को कैसा होना चाहिए?

अब एक और बड़ा ही प्रचलित शब्द जो मसीहीयत में देखने को मिलता है वो है "पास्टर साहब" अधिकतर अगुवे यह पदवी अपने नाम के आगे लगाना पसंद करते है। बाइबल सैमीनरी या बाइबल स्कूल से निकलने के बाद वे ऐसा सोचते हैं कि, "मैं तो अब पास्टर बन गया हूं।" मुझे आप पास्टर कहकर बुलाओ। वे यह दिखाना चाहते हैं कि मैं अब कलीसिया का पास्टर हूं। क्या आपने अपनी बाइबल में कहीं भी किसी भी आयात में पढ़ा है, पास्टर यूहन्ना, पास्टर पौलूस या पास्टर साहब पतरस। अब बाइबल में पास्टर शब्द तो इस्तेमाल हुआ है परन्तु यह एक पदवी दिखाने के लिये नहीं है। कलीसिया में पास्टर चुने जाते थे और वो भी एक मण्डली में एक से अधिक होते थे। आज बहुत से लोग अपने को आपोस्टल तथा प्रोफैट कहलाना पसंद करते हैं यह भी बाइबल अनुसार

अनुचित है और यह लोग बुजुर्ग या प्राचीन होते थे तथा इनका कार्य था चरवाहे की तरह कलीसिया की अगुवाई करना। बाइबल में पास्टरों की योग्यताएं दी गई हैं। 1 तीमुथियुस 3 में हम इन योग्यताओं के विषय में पढ़ सकते हैं। इन्हें बिशप भी कहा जाता था। आज देखने में आता है कि कोई भी व्यक्ति इस पदवी को अपने लिये इस्तेमाल करने लगता है। यह कोई पदवी नहीं है बल्कि परमेश्वर द्वारा दी गई एक जिम्मेदारी है। और वो भी बुर्जगों के लिए।

कई लोग तो धार्मिक रूप से अपने नाम के आगे डॉक्टर भी लगाते हैं। हमें हमेशा यीशु की उन बातों को याद रखना चाहिए जो उसने मत्ती 20:25-28 में कहीं थी। शायद आप नहीं जानते कि एक और पदवी जो धार्मिक रूप से इस्तेमाल की जाती है वो है, "पोप" यदि आपकी बाइबल में यह शब्द कहीं उपयोग हुआ है तो मुझे सूचित करें परन्तु असलियत तो यह है कि कहीं भी बाइबल में हम इस शब्द को नहीं पढ़ते। पोप का अर्थ है "पापा" अर्थात कैथोलिक चर्च का पापा, परन्तु मसीह की कलीसिया का हैड या सिर केवल प्रभु यीशु मसीह है। (कुल. 1:18)।

हमें यह भी जानना चाहिए कि यह सारी धार्मिक पदवियां मनुष्य अपने आपको आदर देने के लिये इस्तेमाल करता है। परमेश्वर ने अपने वचन में इसका कोई अधिकार नहीं दिया है। यदि आप इन पदवियों को इस्तेमाल करते हैं तो एक दिन यानि न्याय के दिन आपको इसका जवाब देना पड़ेगा (2 कुरि. 5:10)। पते की बात तो यह है कि मनुष्य यह सब जानने के बाद भी अपने को बदलना नहीं चाहता क्योंकि उसे दूसरों के सामने आदर सम्मान चाहिए। हमें जानना चाहिए जो पृथ्वी पर अपने को बड़ा बनाकर आदर चाहते उन्हें एक दिन मिट्टी के भाव बिक जाना है। "इक दिन बिक जायेगा माटी के बोल"। यहां से जाने के बाद तब आपके आदर का क्या होगा? मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक बार मैं दिल्ली के एक क्रबिस्तान में गया और वहां एक धार्मिक अगुवे की बढ़िया सी मारबल पत्थर की कब्र पर मैंने उनकी बहुत सारी धार्मिक पदवियां लिखी हुई देखी। पौलुस ने कहा था कि यदि मैं महिमा करूंगा तो मसीह के क्रूस की क्योंकि "मै मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा पर मसीह मुझमें जीवित है।" (गलतियों 2:20)। प्रेरित ने एक और बात कही थी कि सब अपने स्वार्थ के चक्कर में रहते हैं, न कि यीशु मसीह के (फिली. 2:21)। दोस्तों यीशु की खरी शिक्षा आज सब अगुवों के लिये यह है जो उसने पौलुस के द्वारा दी थी, "मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चिंता और एक ही मनसा रखो। विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं वरन दूसरों के भी हित की चिंता करे। जैसा यीशु मसीह का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आपको ऐसा शून्य (0) कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया।" (फिलि. 2:2-7)।

यीशु ने अपने को परमेश्वर का दास समझा। प्रेरितों ने अपनी पत्रियों में लिखा मैं परमेश्वर का दास पौलुस, पतरस और यूहन्ना लिख रहा हूं। आप क्या सोचते हैं? आप परमेश्वर के दास हैं या कुछ और? यीशु ने दास का स्वरूप धारण किया उसने कभी अपने को बड़ा नहीं बनाया।

यीशु का क्रूस

सनी डेविड

संसार में लगभग सब लोग किसी न किसी बात पर घमण्ड करते हैं। कुछ लोग अपने धन पर घमण्ड करते हैं उन्हें लगता है कि उनके पास बहुत धन है, और उसके द्वारा वे कुछ भी खरीद सकते हैं। वे निरंतर अपने धन को बढ़ाते रहते हैं और उनके जीवन में यदि किसी भी वस्तु का सबसे अधिक महत्व होता है तो वह उनका धन होता है। वे उस पर बड़ा घमण्ड करते हैं।

फिर बहुतेरे लोगों को ऐसी ही कुछ अन्य वस्तुओं पर बड़ा गर्व होता है। कुछ लोगों को घमण्ड होता है कि उनके पास अपना बड़ा सा घर है; वे एक मकान के मालिक हैं, या उनकी बहुत सी जमीन है या उनके पास बहुत सी खेती-बाड़ी है। कुछ लोग घमण्ड करते होंगे कि उनके पास कार है, या उनके पास बहुत बढ़िया टी.वी. है या कोई और वस्तु है। कुछ लोगों के घमण्ड का कारण उनकी शक्ति हो सकती है। कदाचित सोचें कि हम बड़े शक्तिमान हैं; हम अपनी शक्ति से बड़े बड़े काम कर सकते हैं। इसी प्रकार से कुछ अन्य लोग अपनी बुद्धि पर बड़ा घमण्ड करते हैं, उन्हें लगता है कि उन्हें कभी कोई कुछ नहीं सिखा सकता। वे अपने आपको बहुत पढ़ा-लिखा और बुद्धिमान समझते हैं, उन्हें अपनी शिक्षा पर बड़ा गर्व होता है। इसी प्रकार और बहुत से लोग संसार की कई वस्तुओं पर घमण्ड करते हैं।

परन्तु हम एक मनुष्य को जानते हैं जो इनमें से किसी भी वस्तु पर घमण्ड नहीं करता था। उसका नाम पौलुस था। एक जगह हम पढ़ते हैं कि अन्य लोग जब अपनी शारीरिक दशा पर घमण्ड कर रहे थे तो उसने कहा, पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं (गलातियों 6:14)।

अन्य लोगों का घमण्ड संसार की वस्तुओं पर या अपने उुपर होता है, परन्तु पौलुस कहता है कि मेरा घमण्ड केवल प्रभु यीशु मसीह के क्रूस पर है। कुछ लोग क्रूस की निंदा करते हैं, वे क्रूस पर यीशु की मृत्यु को तुच्छ समझते हैं वे यीशु के क्रूस की कथा को सुनकर उसका ठट्ठा या उपहास करते हैं। कुछ लोग यीशु के क्रूस के कारण ठोकर खाते हैं। वे उसकी अनेक शिक्षाओं की कदाचित सराहना करते हैं, वे उसे एक बड़ा अच्छा गुरू, शिक्षक मानते हैं, वे उसके जीवन व सिद्धांतों से बड़े ही प्रभावित होते हैं। परन्तु वे यह कभी भी स्वीकार नहीं करना चाहते कि यीशु उनके पापों के कारण क्रूस के ऊपर मारा गया। क्रूस उनके लिए वास्तव में एक ऐसे बड़े पत्थर के समान है जिसके पास आकर वे ठोकर खाकर गिर जाते हैं। सो जबकि कुछ लोग क्रूस की निंदा करते हैं, और जबकि कुछ लोग क्रूस के कारण ठोकर खाते हैं। पौलुस कहता है कि मैं यीशु के क्रूस पर घमण्ड करता हूं।

शायद आप जानना चाहते हैं कि क्या पौलुस के पास घमण्ड करने को कोई वस्तु नहीं थी? वास्तव में यदि पृथ्वी पर कोई भी ऐसा मनुष्य हुआ हो, जिसे संसार की वस्तुओं पर घमण्ड करने का सबसे अधिकार हो, तो वह स्वयं पौलुस ही था। वह एक बुद्धिमान व्यक्ति था। वह एक सुनहरी वंशावली अर्थात इस्राएली या याकूब के घराने में से था, जिससे परमेश्वर ने अनेक प्रतिज्ञाएं की थी। यहूदियों में फारसी का बड़ा मान-सम्मान होता था, क्योंकि वह

उनकी धार्मिक व्यवस्था का गुरू होता था, और पौलुस स्वयं एक फारसी था। इसके अलावा वह जन्म से ही एक रोमी था, अर्थात वह रोम का नागरिक था। यह बात उन दिनों में जबकि रोम संसार भर में एक शक्तिशाली राज्य था, बहुत ही महत्वपूर्ण मानी जाती थी। कहा जाता है कि उन दिनों रोम के नागरिक बनने के लिए लोग बहुत धन देकर नागरिकता मोल लिया करते थे। क्योंकि राज्य में ऐसी अनेक सुविधाएं थीं, जो केवल रोमी व्यक्ति को ही प्राप्त होती थीं। परन्तु पौलुस जन्म से ही रोम का नागरिक था। फिर हम उसकी शिक्षा पर ध्यान करते हैं, और हम देखते हैं कि उसने उस समय के बहुत बड़े धर्मगुरू गमलीएल से शिक्षा प्राप्त की थी। गमलीएल का यहूदियों के बीच में बड़ा आदर व सम्मान था, वह एक फारसी व्यवस्थापक तथा उच्च कोटि का शिक्षक था। फिर हम पौलुस के मनपरिवर्तन को देखते हैं, अर्थात यह कि किस प्रकार वह यहूदी धर्म छोड़कर एक मसीही बना, यह घटना बड़ी ही आश्चर्यजनक थी। हम पढ़ते हैं कि उस समय पौलुस मसीह और मसीह की कलीसिया का कट्टर विरोधी था। उसने बहुत से मसीही लोगों को मरवाने में अपनी साक्षी दी थी, उसने सैकड़ों मसीही लोगों को बंदीगृह में डाल-डालकर उन पर घोर अत्याचार किया था। और मसीही लोगों को सताने की इसी धुन में एक दिन जब वह दमिश्क की ओर चला जा रहा था, तो एकाएक उसके चारों ओर आकाश में से बड़ी ज्योति चमकी। और हम देखते हैं कि पौलुस की आंखों की रोशनी जाती रही और वह भूमि पर गिर पड़ा, और उसे ये शब्द सुनाई पड़े, ''हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?'' पौलुस ने जिसका इब्रानी नाम शाऊल था, जब यह जानना चाहा कि वह आवाज किसकी है तो प्रभु ने उससे कहा, ''मैं यीशु हूं, जिसे तू सताता है।'' और प्रभु ने उसे आज्ञा देकर कहा, ''अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है, वह तुझ से कहा जायेगा।'' तब हम पढ़ते हैं कि जो लोग शाऊल के साथ जा रहे थे, वे यह सब सुनकर बड़े ही चकित हुए। तब वे लोग शाऊल का हाथ पकड़कर उसे नगर में ले गए। तीन दिन बाद, प्रभु ने हनन्याह नाम के अपने एक चेले को पौलुस के पास भेजा, जिसने आकर उस पर अपना हाथ रखकर कहा, हे भाई शाउल प्रभु अर्थात यीशु जो उस रास्ते में जिससे तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए। और तुरंत शाऊल की आंखों की रोशनी वापस आ गई, वह फिर से देखने लगा। और फिर हम पढ़ते हैं कि उसने पौलुस से कहा, अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल। सो उसने उठकर बपतिस्मा लिया (देखें प्रेरितों 9 तथा 22 अध्याय)।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जिस स्थिति में पौलुस मसीही बना वह बड़ी ही आश्चर्यपूर्ण थी। उसकी प्रभु से बातचीत हुई थी, उसने उसकी आवाज को सुना था; यह बड़े गर्व की बात थी। मसीही बनने के बाद, पौलुस ने प्रभु की कलीसिया की अनेक मण्डलियों की स्थापना की, नये नियम की 27 पुस्तकों में से उसने लगभग 14 पुस्तकों को लिखा और प्रभु की कलीसिया में पौलुस का बड़ा महत्व था।

सो, इस प्रकार हमने देखा कि पौलुस बहुत दिमाग वाला व्यक्ति था। वह ऊंचे वंश से था। उसका संबंध एक बड़े संगठन से था। उसकी नागरिकता रोमी थी। उसने बड़ी ऊंची शिक्षा प्राप्त की थी। उसका मसीही बनना बड़ी ही आश्चर्यजनक बात थी। कलीसिया में वह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति था। परन्तु उसे उनमें से किसी भी बात पर घमण्ड नहीं था। उसका घमण्ड केवल यीशु मसीह के क्रूस पर था।

अपनी एक और पत्री में वह लिखकर कहता है, पर मैं तो शरीर पर भी भरोसा रख

सकता हूं यदि किसी और को शरीर पर भरोसा रखने का विचार हो, तो मैं उसे भी बढ़कर रख सकता हूं। आठवें दिन मेरा खतना हुआ, इस्राएल के वंश, और बिन्यामीन के गोत्र का हूं; इब्रानियों का इब्रानी हूं; व्यवस्था के विषय में यदि कहो तो फरीसी हूं। उत्साह के विषय में यदि कहो तो कलीसिया का सताने वाला; और व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में यदि कहो तो निर्दोष था। परन्तु जो-जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। वरन मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं, जिस कारण मैंने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूं, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूं (फिलिप्पियों 3:4-8)।

मसीह बनने के बाद पौलुस का सम्पूर्ण दृष्टिकोण बदल गया था। जिन बातों पर वह पहले घमण्ड किया करता था, अब उन्हीं बातों को वह कूड़ा करकट समझता था। अब उसके जीवन में घमण्ड करने की केवल एक ही बात थी, और वह थी मसीह का क्रूस। कदाचित हम पूछें कि पौलुस क्यों मसीह के क्रूस पर घमण्ड करता था? इसके कुछ विशेष कारण हैं।

सबसे पहली बात यह है कि यीशु का क्रूस परमेश्वर के प्रेम का निशान है। पवित्र बाइबल बताती है, क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए (यूहन्ना 3:16)। परमेश्वर की दृष्टि में पाप से बढ़कर कुछ भी घृणाजनक नहीं है। परन्तु वह मनुष्य से प्रेम करता है। पाप का दण्ड़ बड़ा ही भयानक था। परन्तु परमेश्वर का प्रेम बड़ा ही महान था। उसने अपने इकलौते पुत्र यीशु को इस संसार में भेज दिया। फिर उसने सब लोगों के पापों को लेकर उसके ऊपर रखा, और उसे क्रूस की भयानक मृत्यु के हवाले कर दिया। इसीलिए, हम पढ़ते हैं, कि परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा (रोमियों 5:8)।

दूसरी ओर, यीशु का क्रूस सुलह का समाचार है। वहां हम परमेश्वर और मनुष्य के बीच सुलह होते हुए देखते हैं। मनुष्य परमेश्वर से दूर था, क्योंकि उसके पाप व अधर्म के काम उसके और परमेश्वर के बीच में एक ऐसी बड़ी दीवार बनकर खड़े हुए थे जो उसे अपने सृष्टिकर्ता के पास आने से रोकती थी। परन्तु जब परमेश्वर के पुत्र यीशु ने उस क्रूस के ऊपर अपना लोहू बहाया, तो वह हर एक मनुष्य के पाप का दाम था। पाप का वह दण्ड जिसे मनुष्य को स्वयं लेना था, प्रेमी परमेश्वर के पुत्र ने उसे अपने ऊपर लिया; और उस क्रूस के ऊपर हर एक मनुष्य के बदले में स्वयं अपने आपको बलिदान किया। पाप की वह दीवार जो मनुष्य ने अपने और परमेश्वर के बीच स्वयं खड़ी की थी, यीशु ने क्रूस पर अपने बलिदान के द्वारा ढहा दी। इस कारण पवित्र बाइबल का एक लेखक कहता है, पर अब तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो। क्योंकि वही हमारा मेल है, जिसने दोनों को एक कर लिया, और अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढहा दिया। और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए। (इफिसियों 2:13-16)। और उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा मेल-मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर की हो, चाहे स्वर्ग में की (कुलुस्सियों 1:20)। सो जब मैं यीशु के क्रूस पर विचार करता हूं तो वहां मैं केवल परमेश्वर के प्रेम को ही नहीं देखता, परन्तु यीशु का क्रूस मुझे इस बात की भी याद दिलाता है कि मनुष्य जो पहले परमेश्वर से

दूर और अलग था, अब क्रूस पर उसके बलिदान के कारण परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकता है। क्योंकि यीशु ने क्रूस पर अपना पवित्र लहू बहाकर परमेश्वर और मनुष्य के बीच बैर अर्थात उस पाप रूपी दीवार को जो मनुष्य को परमेश्वर के पास आने से रोकती थी, ढहा दिया है। अब मनुष्य यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकता है।

यीशु का क्रूस उद्धार पाने वाले के निकट परमेश्वर की सामर्थ है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हजारों लोग यीशु के क्रूस की निंदा करते हैं, बहुत से उसके कारण ठोकर खाते हैं; और कइयों की नजर में यीशु का क्रूस मूर्खता है। किन्तु प्रेरित पौलुस कहता है, क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है। (1 कुरिन्थियों 1:18)।

क्रूस पर बलिदान होकर यीशु परमेश्वर की इच्छानुसार संसार के सब लोगों के लिए मारा गया (इब्रानियों 2:9)। पवित्र बाइबल कहती है, पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया (इब्रानियों 5:8, 9)।

आप भी यीशु के द्वारा अपने पापों से उद्धार प्राप्त कर सकते हैं; वह आपका भी उद्धारकर्ता बन सकता है, यदि आप अपने आपको उसकी आज्ञा मानने के लिए उसे दे दें। उसकी आज्ञाएं ये हैं कि आज उस पर विश्वास करें, अपने पापों से मन फिराएं और अपने पापों की क्षमा के लिए उसके नाम में बपतिस्मा लें (यूहन्ना 8:24; लूका 13:3; मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)।

जब मनुष्य इस प्रकार से मनुष्य की आज्ञा मानता है तो प्रभु उसे क्षमा करता है; उसका उद्धार करता है और उसे अपनी कलीसिया अर्थात अपनी मण्डली में मिला लेता है (प्रेरितों 2:47)। अपने लोगों से प्रभु ने प्रतिज्ञा करके कहा था कि यदि वे उसके प्रति अंत तक यानी प्राण देने तक, विश्वासी बने रहें तो वह उन्हें अनंत जीवन का वह मुकुट देगा जो कभी मुरझाने का नहीं (प्रकाशितवाक्य 2:10)। क्या आप इस इनाम को प्राप्त करना नहीं चाहेंगे?

भजन गाना

जे. सी. चोट

मसीही धर्म भजन गाने वाला धर्म है। भजन गाना उस उपासना का एक और नियम है जिसका वर्णन हमें नए नियम में मिलता है। इस संक्षिप्त पाठ में, हम उपासना के इस बड़े ही महत्वपूर्ण अंग के ऊपर विशेष विचार करेंगे।

सर्वप्रथम, हम इस विषय से संबंधित कुछ ऐसे पदों को देखेंगे जिन का वर्णन हमें पवित्रशास्त्र में मिलता है-

1. फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर गए। (मत्ती 26:30)।

2. आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और बंधुए उनकी सुन रहे थे। (प्रेरितों 16:25)।

3. और अन्य जाति भी दया के कारण परमेश्वर की बढ़ाई करें; जैसा लिखा है कि इसलिए मैं जाति-जाति में तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरे नाम के भजन गाऊंगा। (रोमियों 15:9)।

4. .....मैं आत्मा से गाऊंगा और बुद्धि से भी गाऊंगा। (1 कुरिन्थियों 14:15)।

5. और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो। (इफिसियों 5:19)।

6. मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ और अपने-अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ। (कुलुस्सियों 3:16)।

7. वचन कहता है, कि मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा। (इब्रानियों 2:12)।

8. यदि तुम में कोई दुखी हो तो वह प्रार्थना करे, यदि आनन्दित हो, तो वह स्तुति के भजन गाए। (याकूब 5:13)।

9. और वे यह नया गीत गाने लगे ..... (प्रकाशित वाक्य 5:9)।

10. और वे सिंहासन के सामने....एक नया गीत गा रहे थे....(प्रकाशितवाक्य 14:3)।

11. और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत और मेम्ने का गीत गा कर कहते थे..... (प्रकाशित वाक्य 15:3)।

सम्पूर्ण नए नियम में हमें केवल यही पद मिलते हैं जो हमें गाने के विषय में बताते हैं। इनसे यह स्पष्ट है कि इस संबंध में प्रभु क्या चाहता है। इस विषय में इससे अधिक या इससे कम कुछ भी करना प्रभु के वचन के अनुसार नहीं होगा।

अधिकांश लोगों के निकट गाने का तात्पर्य धुन से है, और धुन का तात्पर्य बाजों से है। इसी कारण अधिकतर धार्मिक मण्डलियों के बीच में गाने के साथ बाजों का भी इस्तेमाल किया जाता है। परन्तु जबकि सभी लोग इस बात पर सहमत हो सकते हैं कि नए नियम की शिक्षानुसार हमें अपनी उपासना सभाओं में भजन तथा आत्मिक गीत गाने चाहिए, किन्तु इस बात पर हम सभी सहमत नहीं हो सकते कि गाने के साथ बाजों को भी बजाना चाहिए। अब बाइबल इस संबंध में क्या बताती है? क्या बाइबल के अनुसार हमें केवल गाना ही चाहिए या उपासना में बाजों का भी इस्तेमाल करना चाहिए? क्या बाजों को बजाए बिना हम उपासना कर सकते हैं? क्या उन में से किसी एक का उपयोग किया जा सकता है। इस संबंध में हम निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें।

सबसे पहिले हम यह देखते हैं कि संगीत दो प्रकार के हैं, यानि कंट-संगीत और वाद्य संगीत। कंठ संगीत वह है जो मनुष्य के गले से निकलता है। यह वह संगीत है जो मनुष्य के भीतर से निकलता है। उसमें जान है। वह स्वयं परमेश्वर की सृष्टि में से उत्पन्न होता है। इसी कारण यह माना जाता है कि पृथ्वी पर सबसे सुन्दर संगीत वह है जो मिलकर मनुष्यों के गलों से निकलता है। किन्तु वाद्य संगीत इसके बिल्कुल विपरीत है। उसे मनुष्य ने अपनी कारीगरी से बनाया है। बाजे को बनाने वाला मनुष्य स्वयं है। वह बेजान, निर्जीव, आत्म-रहित और हृदय रहित है। और उससे जो आवाज निकलती है वह केवल तभी निकलती है जब कोई उसके ऊपर हाथ मारता है, या उसके तारों को हिलाता है, या उसमें फूंकता है अर्थात जिस प्रकार का वह बाजा है। उसका निर्माण परमेश्वर ने नहीं किया है, परन्तु मनुष्य ने उसे अपनी बुद्धि से बनाया है। वह दूसरे दर्जे का है, सो अब परमेश्वर कौन से संगीत को चाहेगा? इब्रानियों की पत्री का लेखक कहता है, इसलिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान अर्थात उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिये सर्वदा चढ़ाया करें। (इब्रानियों 13:15)।

कुछ प्रसिद्ध धार्मिक अगुओं ने भी शताब्दियों से उपासना में बाजों के उपयोग को गलत बताया है और बाइबल की शिक्षानुसार केवल गाने को ही उचित ठहराया है। इस संबंध में उनमें से कुछ का वर्णन यहां किया जा रहा है-

1. जॉन वेजली - हमारी उपासना के स्थानों पर बाजों की मौजूदगी से मुझे कोई ऐतराज नहीं, बशर्ते न तो उनकी आवाज सुनाई पड़े और न देखें जाएं। (क्लार्क्स कॉमेंन्ट्री, खण्ड 4 पृष्ठ 686)।

2. जॉन कॉलविन - परमेश्वर का स्तुतिगान बाजों को बजाकर करना लोबान और मोमबत्ती जलाने और व्यवस्था की अन्य छाया-मात्र वस्तुओं का पुन: आरंभ करने के बराबर है। बैपटिस्ट लोगों ने, मूर्खतापूर्ण इसे तथा ऐसी ही अनेक अन्य शिक्षाओं को यहूदियों से प्राप्त किया है। (जॉन कॉलविन्स कमिन्ट्री, भजन तैंतिस)।

3. मार्टिन लूथर - ऑरगन बाल (देवता) का चिन्ह है। (मैकलिन्टोक/स्ट्रौंग्स एनसाइक्लोपीडिया, म्यूजिक खण्ड छ:, पृष्ठ 762)।

4. ऐंडम क्लार्क - विज्ञान के दृष्टिकोण से संगीत की मैं प्रशंसा और सराहना करता हूं परन्तु परमेश्वर के घर में बाजों की उपस्थिति से मुझे नफरत है और उससे मैं घृणा करता हूं क्योंकि यह बाजों का अनुचित उपयोग है; और इस कारण मसीहीयत के संस्थापक की उपासना में इस प्रकार की सभी अनुचित बातों के प्रति मैं अपना विरोध प्रकट करता हूं। (क्लार्क्स कॉमेंट्री, खण्ड चार, पृष्ठ 686)।

इसी प्रकार बाइबल के अनेक अन्य विद्वानों ने भी उपासना में बाजों को बजाएं जाने के विरोध में अपनी आवाज उठाई है। परन्तु मसीही उपासना में बाजों का इस्तेमाल कहां से आरंभ हुआ? इसका आरंभ कैथोलिक कलीसिया से हुआ था, और क्योंकि सभी साम्प्रदायिक कलीसियाएं कैथोलिक कलीसिया में से निकली है इस कारण उनमें से अधिकांश कैथोलिक कलीसिया की ही तरह बाजों को उपयोग में लाती है।

साम्प्रदायिक कलीसियाओं के बहुतेरे लोग आज उपासना में बाजों का बजाया जाना निम्नलिखित कारणों से उचित ठहराना चाहते हैं:

1. वे कहते हैं, कि दाऊद उनका इस्तेमाल करता था। यदि यह सच है तो हमें यह भी अवश्य याद रखना चाहिए कि दाऊद पुराने नियम के भीतर रहता था और हम आज नए नियम के भीतर है। यदि दाऊद कुछ करता था तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वही काम आज हम भी कर सकते हैं। और यदि कर सकते हैं तो हमें पशु-बलि, इत्यादि करने के लिये साल में एक बार अवश्य यरूशलेम को जाना चाहिए। याद रखिए, कि जो लोग बाजों को बजाने के लिये दाऊद के पास जाते हैं उन्हें उससे यही प्राप्त होता है, और कदाचित ऐसी ही कुछ अन्य वस्तुएं भी। परन्तु बात यह है कि वे अन्य उन सब वस्तुओं को नहीं लेना चाहते जो दाऊद के पास थी। फिर भी, अपनी बाइबल में से पढ़कर देखिए, यूहन्ना 1:17; 2 कुरिन्थियों 3; इब्रानियों 10:9; इत्यादि।

2. वे कहते हैं, कि नए नियम में यह तो नहीं लिखा है कि उनका इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। परन्तु ऐसे ही बहुत सी अन्य बातों के बारे में भी यह नहीं लिखा है कि हमें उपासना में उन्हें उपयोग में नहीं लाना चाहिए। किन्तु उपासना में क्या होना चाहिए यह अवश्य लिखा है, और गाना गाने के लिये लिखा है (इफिसियों 5:19)। इसलिये किसी दूसरी वस्तु का स्थान ही नहीं रह जाता।

3. वे कहते हैं, कि इसमें कोई बुराई नहीं है। यदि लोग अपने घरों, या शादियों में, या

मनोरंजन इत्यादि करने के लिये बाजों को बजाते हैं तो निश्चय ही इसमें कोई बुराई नहीं है, परन्तु इन सब बातों में और उपासना में अंतर है। क्योंकि परमेश्वर ने उपासना में बाजों को बजाने की आज्ञा नहीं दी है इसलिए उपासना में उन्हें शामिल करना अनुचित है। (प्रकाशित वाक्य 22:18, 19)।

4. वे कहते हैं कि उपासना करने में बाजे सहायक सिद्ध होते हैं। यदि ऐसा है, तो फिर प्रभु ने उनके लिये आज्ञा क्यों नहीं दी? परन्तु मैं आप से कहना चाहूंगा कि वे सहायक नहीं परन्तु इस्तेमाल करने पर वास्तव में उपासना के एक अंग बन जाते है। यह बात पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार नहीं है।

5. वे कहते हैं, कि उन्हें वह अच्छा लगता है। ऐसे तो मुझे केक और कैम्पा कोला अच्छा लगता है, परन्तु क्या इसका अर्थ यह है कि मैं उनहें उपासना में इस्तेमाल कर सकता हूं? प्रश्न यह नहीं है कि क्या वह हमें अच्छा लगता है? परन्तु यह है, कि क्या उसे प्रभु चाहता है?

सो, इस कारण जब हम सब प्रभु के दिन उपासना करने के लिये एकत्रित होते हैं तो हमें गाकर प्रभु की प्रशंसा करनी चाहिए। ऐसा हमें आत्मा और सच्चाई से करना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि हमें समझकर पूरी ईमानदारी के साथ गाना चाहिए। हमारा गाना पवित्रशास्त्र की शिक्षानुसार होना चाहिए और इसका अर्थ है कि प्रभु का स्तुतिगान हमें अपने कंठ से गाकर, बिना बाजे के, करना चाहिए। और न केवल यही, परन्तु इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारे गानों और भजन से के बोल भी पवित्रशास्त्र की शिक्षा पर आधारित हों तथा आत्मिक हों।

बाइबल मंडली के रूप में एकत्रित होकर हमें गाने की आज्ञा देती है। अर्थात भजन, स्तुतिगान और आत्मिक गीत हम सब की एक साथ मिलकर एक आवाज में होकर गाने चाहिए। ऐसे गानों के द्वारा हम परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं, एक-दूसरे को सिखाते हैं और प्रोत्साहित करते हैं, और प्रभु के प्रति विश्वासी बने रहने के लिए एक-दूसरे की आत्मिक उन्नति करते हैं। विभिन्न प्रकार के बाजों के शोर से मुक्त रह कर और बिना किसी रूकावट के, भक्ति तथा शांति और आत्मा की श्रद्धा के साथ अपनी आवाजों को एक साथ मिलाकर स्वर्ग के परमेश्वर की प्रशंसा में गाना कितनी सुहावनी बात है। इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है? इससे बढ़कर प्रेरणादायक बात और क्या हो सकती है? और परमेश्वर यही चाहता है।

बाइबल क्या शिक्षा देती है?

बाइबल यह शिक्षा देती है कि मसीही लोग असामान्य विचित्र प्रकार के लोग हैं, ''तुम एक चुना हुआ वंश और राज-पदधारी याजकों का समाज और पवित्र लोग और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो।'' (1 पतरस 2:9)।

वह लोग इसलिये विचित्र हैं क्योंकि वह सांसारिक सिद्धांतों को नहीं मानते, परन्तु उनका प्रयास रहता है कि वह मसीह के पदचिन्हों का अनुसरण करें जैसी उनको शिक्षा दी गई है, ''और तुम उसी के लिये बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुंम्हारे लिये दु:ख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद-चिन्हों पर चलो।'' (1 पतरस 2:21)।

मसीह ने कहा था कि उसके अनुयायी इस संसार में हैं पर वह इस संसार के नहीं है,

जैसे वह इस संसार का नहीं था, जब वह इस धरती पर था। (यूहन्ना 17:14-16)।

प्रेरित पौलुस ने लिखा कि हमारी नागरिकता स्वर्ग की है, ''पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है, और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने की बाट जोह रहे हैं।'' (फिलिप्पियों 3:20)।

यह बात सच है, जब हम धरती पर है तो जिस देश में हम रहते हैं हम उसी के नागरिक हैं, और एक मसीही होने के नाते अपने देश में एक हमारी जिम्मेदारी है। हमारी सबसे पहली जिम्मेदारी परमेश्वर के प्रति है जैसी शिक्षा हमें मसीह ने मत्ती 6:33 में दी, ''इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो यह सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।''

इस कारण हमें हर रोज उस धरती पर रहते हुए ऐसा जीवन व्यतीत करना चाहिए जिससे हमारे हर काम से परमेश्वर के नाम की महिमा हो, ''उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देख कर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं बड़ाई करें।''

मसीह होने के नाते हमारा दायत्व अपने संगी-साथियों के प्रति भी है। मसीह ने यह शिक्षा दी थी, ''इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो।'' (मत्ती 7:12)। हम चाहते हैं दूसरे हमसे अच्छा व्यवहार करे, हमारे बारे में अच्छा बोलें, इसी कारण हमें भी दूसरों के साथ ऐसा ही करना चाहिए। हम नहीं चाहते दूसरे हमारे साथ बेइमानी करें, या हमसे झूठ बोलें, या हमें नुकसान पहुंचाएं, इस कारण पहले होकर हमें दूसरों के साथ भी वैसा नहीं करना चाहिए। मसीही होने के नाते हमारा दायत्व हमारे राष्ट्र के प्रति भी है। हम दुष्ट और कानून न मानने वाले लोगों की ओर से स्वतंत्रता और सुरक्षा का आनन्द प्राप्त करते हैं। केवल एक स्थापित सरकार ही इस सुविधाओं को उपलब्ध करा सकती है। उसके अलावा कई जन सेवाएं हैं जिनका हम हर रोज उपयोग करते हैं, यह संभव नहीं है कि कई व्यक्तिगततौर पर अपने लिये इन सुविधाओं का प्रयोजन कर सके, जैसे जल, विद्युत, मल का बहाना इत्यादि। इन सुविधाओं के प्रति हमारा नैतिक दायत्व बन जाता है। जिम्मेदार नागरिक होने के नाते, हम जानते हैं कि एक अच्छे नागरिक में असफल होने का मतलब, जिस परमेश्वर के हम कहलाते हैं उसको विफल करना। इस कारण हमें जन-संबंधी सुविधाओं के प्रति दृढ़ता से आज्ञाकारी होना चाहिए। कई चीजें ऐसी होंगी जिनको हम पसंद नहीं करते या हम सोचते हैं कि उन सुविधाओं की योजना दूसरे तरीके से बनाते या उनको दूसरे ढंग से करते। पर बजाए उनका विरोध करने या उन पर झुंजलाने से अच्छा है कि हम उनके प्रति आभार प्रकट करें जिनका हम प्रति दिन आनंद लेते हैं। स्वभाविक है यदि कोई ऐसा कानून है जो परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करता है तो एक मसीह को उसका विरोध करना चाहिए, तब पतरस और अन्य प्रेरितों ने उत्तर दिया, ''मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्त्तव्य है।'' (प्रेरितों 5:29)।

परन्तु एक परमेश्वर की संतान में कभी भी यह विचार नहीं आएगा कि वह बदले की भावना रखे या बदला ले। बाइबल शिक्षा देती है, ''बुराई के बदले किसी से बुराई न करो, जो बाते सब लोगों के निकट भली है, उनकी चिंता किया करो। जहां तक हो सके, तू भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो। हे प्रियो, बदला न लेना, परन्तु परमेश्वर के क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, ''बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा।'' परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला, यदि प्यासा हो तो उसे पानी पिला, क्योंकि

ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।'' (रोमियों 12:17-21)।

हम मसीहीयों का यह विश्वास है कि सरकार की नियुक्ति परमेश्वर द्वारा की जाती है। इसका अर्थ यह हुआ कि हमें अपना कर्त्तव्य एक कानून का पालन करने वाले नागरिक की तरह पूरा करना है। भले ही दुष्ट प्रवृत्ति के लोग हमारे उच्च अधिकारी हों। हमारा विश्वास है कि परमेश्वर सर्वोच्य है, सबसे महान है और उसकी नजरों से कुछ भी छुपा नहीं। परमेश्वर की आज्ञाकारी संतान होने के कारण हमारा प्रयत्न रहता है कि हम हर एक के साथ शांति से रहें। और किसी के भी प्रति हमारे हृदय में बदला लेने की भावना न हो और न ही बदला लेने का सोचें। हम परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं और यदि एक निष्ठुर शासक भी राज कर रहा हो, तब भी हम वही करेंगे। जिसकी करने की आज्ञा परमेश्वर ने हमें अपने वचन बाइबल में दी है।

रोमियों 13:1-7 में राज्य के प्रति कर्त्तव्य लिखे हैं। ''हर एक व्यक्ति शासकीय अधिकारियों के आधीन रहे, क्योंकि कई अधिकार ऐसा नहीं जो हो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार है, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। इसलिये जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का सामना करता है, और सामना करने वाले दण्ड पाएंगे। क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं परन्तु बुरे काम के लिये डर का कारण है, अत: यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर और उसकी ओर से तेरी सराहना होगी, क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर, क्योंकि वह तलवार व्यर्थ लिये हुए नहीं, और परमेश्वर का सेवक है कि उसके क्रोध के अनुसार बुरे काम करने वाले को दण्ड दे। इसलिये अधीन रहना न केवल उस क्रोध के डर से आवश्यक है, वरन विवेक भी यही गवाही देता है। इसलिये कर भी दो क्योंकि शासन करने वाले परमेश्वर के सेवक हैं और सदा इसी काम में लगे रहते हैं। इसलिये हर एक का हक चुकाया करो, जिसे कर चाहिए, उसे कर दो, जिसे महसूल चाहिए, उसे महसूल दो, जिससे डरना चाहिए, उससे डरो, जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर करो।''

हम दोबारा पढ़ते हैं, प्रभु के लिये मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबंध के आधीन रहो, राजा के इसलिये कि वह सब पर प्रधान है, और हाकिमों के क्योंकि वे कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिये उसके भेजे हुए हैं। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम भले काम करने के द्वारा निर्बुद्धि लोगों की आज्ञानता की बातों को बंद कर दो। उसमें अपने आपको स्वतंत्र जानो, पर अपनी इस स्वतंत्रता को बुराई के लिये आड़ न बनाओ; परन्तु अपने आप को परमेश्वर के दास समझकर चलो। सब का आदर करो, भाईयो से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो।'' (1 पतरस 2:13-7)।

परमेश्वर से डरने वाले और कानून का पालन करने वाले मसीही कभी ऐसे लोगों की संगति नहीं करेंगे जो कि नागरिक अधिकारों का पालन नहीं करते। यह संभव है कि यदि कोई कानून परमेश्वर के कानून के विपरीत है और आमतौर से जनहित में नहीं है तो हमें उसका विरोध करना चाहिए। ऐसी स्थिति में हम ऐसे कानून को बदलने का प्रयास कर सकते हैं ताकि यह सब लोगों के हित में हो और ईश्वरीय कानून के अनुरूप हो। खासतौर पर जबकि हमारे पास यह अवसर है कि हम अपने मतदान के डालने के लिये संवैधानिक अधिकार का उचित रीति से उपयोग करें, परन्तु हमें कभी भी कानून तोड़ने वालों की तरह बन कर, ऐसा बदलाव लाने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए।

-अनुवादक, फैरल भाई

मसीही व्यक्ति और सरकार

रॉउ रदरफ़ॉर्ड

क्या मसीही व्यक्ति सरकारी नौकरी कर सकता है? क्या मसीही लोग अपने देश के चुनाव में वोट डाल सकते हैं? क्या मसीही लोग अपने देश के झण्डे को सलामी दे सकते हैं? और क्या वे राष्ट्रीय गीत गा सकते हैं? ऐसे प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं क्योंकि मसीही लोग जानते हैं कि कुछ राजनेता बेईमान होते हैं और कुछ सरकारी अधिकारी भ्रष्ट। परन्तु बाइबल क्या कहती है?

जब यीशु संसार में था, तब उस समय उसके देश (इस्राएल) पर रोम का शासन था। यहूदी लोग रोमियों से घृणा करते थे। रोमी अधिकारी प्रायः भ्रष्ट और क्रूर होते थे। एक बार फरीसियों ने, जो यीशु को उलझाने की फिराक में रहते थे, उससे पूछा, कैसर को कर देना उचित है या नहीं? (मत्ती 22:15-28)। यदि यीशु यह कह देता कि कर देना गलत है तो उसे रोमी अधिकारियों ने पकड़ लेना था। यदि वह कहता कि कर देना अच्छा है तो यहूदियों ने उसके पीछे पड़ जाना था। उन फरीसियों को लगा कि उन्होंने यीशु को अपने चक्कर में फंसा लिया है। यीशु ने उनसे कहा कि वे उसे एक रोमी सिक्का दिखाएं। सिक्का हाथ में लेकर उसने उनसे पूछा कि सिक्के पर किसकी मोहर है? उन्होंने उत्तर दिया, कैसर की। तब यीशु ने उत्तर दिया, जो कैसर का है वह कैसर को दो और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो (मत्ती 22:21)।

हर मसीही दो राज्यों का नागरिक होता है, जिसमें एक राज्य तो आत्मिक है जबकि दूसरा सांसारिक। हम मसीह के राज्य के लोग है, जिसे मसीह की कलीसिया कहा जाता है (मत्ती 16:18, 19; कुलुस्सियों 1:13)। इसके साथ ही हम सांसारिक देश के लोग भी हैं, जैसे कि फ्रांस, चीन, भारत, पाकिस्तान आदि। हमें चाहिए कि जिस भी राज्य में हम रहते हैं, वहां के अच्छे नागरिक बनें। हर राज्य में करने के लिए ड्यूटी दी जाती है।

पौलुस प्रेरित के समय में भी रोम का शासन संसार के अधिकतर देशों पर था (प्रेरितों 22:25-29)। नीरो जो कि सबसे भ्रष्ट अधिकारी हुआ है, तब गद्दी पर ही था, जब पौलुस ने लिखा कि हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के अधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। इसलिए जो कोई अधिकार का विरोध करता हैं, वह परमेश्वर की विधि का सामना करता है, और सामना करने वाले दण्ड पाएंगे। क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिए डर का कारण हैं; सो यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर और उसकी ओर से तेरी सराहना होगी, क्योंकि वह तेरी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर, क्योंकि वह तलवार व्यर्थ लिए हुए नहीं, और परमेश्वर का सेवक है कि उसके क्रोध के अनुसार बुरे काम करने वाले को दण्ड दे। इसलिए अधीन रहना न केवल उस क्रोध के डर से आवश्यक है, वरन विवेक भी यही गवाही देता है। इसलिए कर भी दो, क्योंकि वे परमेश्वर के सेवक है, और सदा इसी काम में लगे रहते है। इसलिए हर एक का हक चुकाया करो, जिसे कर चाहिए, उसे कर दो; जिससे डरना चाहिए, उससे डरो; जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर करो। (रोमियों 13:1-7)।

पतरस प्रेरित ने मसीही लोगों को आज्ञा दी प्रभु के लिए मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबंधक के अधीन में रहो, राजा के इसलिए कि वह सब पर प्रधान है। और हाकिमों के क्योंकि वे कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिए उसके भेजे हुए हैं। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम भले काम करने से निर्बुद्धि लोगों की अज्ञानता की बातों को बंद कर दो। और अपने आपको स्वतंत्र जानो पर अपनी इस स्वंतंत्रता को बुराई के लिए आड़ न बनाओ, परन्तु अपने आपको परमेश्वर के दास समझकर चलो। सबका आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो (2 पतरस 2:13-17)।

कई बार पूछा जाता है कि यदि कोई सरकार मसीही लोगों को वह करने की आज्ञा दे जो परमेश्वर के नियम के विरूद्ध हो तो क्या करना चाहिए? यदि मनुष्य के नियम और परमेश्वर के नियम के बीच तकरार आ जाती है तो परमेश्वर ही का नियम माना जाना आवश्यक है। यहूदी अधिकारियों ने प्रेरितों को मसीह का प्रचार करने के कारण गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने उनसे कहा, क्या हमने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी थी, कि तुम इस नाम से उपदेश न करना? तौभी देखो, तुमने सारे यरूशलेम को अपने उपदेश से भर दिया है और उस व्यक्ति का लोहू हमारी गर्दन पर लाना चाहते हो। तब पतरस और, और प्रेरितों ने उत्तर दिया, कि मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है। (प्रेरितों 5:28, 29)। हमें परमेश्वर का नियम और मनुष्य का नियम दोनों ही मानने चाहिए? यदि दोनों में कोई तकरार आती है तो मनुष्य की आज्ञा तोड़कर ही परमेश्वर की आज्ञा को मानना आवश्यक है। यही एक समाधान है।

कई लोग कहते हैं कि संसार के अन्य लोग तो सरकारी नौकरी कर सकते हैं, परन्तु मसीही लोग नहीं। बाइबल ऐसा नहीं बताती। सरकारी नौकरी सब लोगों के लिए है। यदि मसीही व्यक्ति के लिए सरकारी नौकरी करना गलत है तो यह सबके लिए गलत हैं यदि गैर मसीही व्यक्ति के लिए सरकारी नौकरी करना उचित है तो मसीही व्यक्ति के लिए भी उतना ही उचित है।

निश्चय ही कुछ अधिकार मिलने पर व्यक्ति उसका दुरुपयोग करने के प्रलोभन में पड़ सकता है। शक्ति का गलत इस्तेमाल करना बुरी बात है।

अधिकार मिलने पर कोई भी बेईमानी से धनवान बनने की परीक्षा में पड़ सकता है। मसीही लोगों को चाहिए कि वे अपने साथियों के साथ ईमानदारी से और नेकनीयत से पेश आएं। व्यापार में भी ऐसा ही होना चाहिए। सरकारों में भी ऐसा ही होना आवश्यक है।

क्या मसीही व्यक्ति को कर देने चाहिए? क्या मसीही व्यक्ति अपने देश के झण्डे को सलामी देकर और राष्ट्रीय गीत गाकर देश की प्रशंसा कर सकता है? क्या वह चुनाव में वोट डाल सकता है? क्या वह किसी सरकारी या राजनैतिक पद पर लग सकता है? इन सब प्रश्नों का उत्तर है हां। परन्तु एक मसीही के लिए आवश्यक है कि वह परमेश्वर को और उसके राज्य को पहला स्थान दे (मत्ती 6:33)। उसके लिए सब बातों में ईमानदार होना भी आवश्यक है (2 कुरिन्थियों 8:21)।

नाम जो हमें मिला है

गैरी सी. हैम्टन

सैकड़ों अलग-अलग धार्मिक समूह आपस में अलग-अलग नामों से बंटे है। इस कारण बहुत से नाम मानवीय उपज है, क्योंकि उनका परमेश्वर के वचन में उल्लेख नहीं है। क्या इससे कोई फर्क पड़ता है कि हमारा नाम क्या है?

बाइबल में नाम रखने को बड़ा महत्व दिया गया है। अब्राम का अर्थ है उन्नत पिता। परमेश्वर ने उसका नाम बदलकर अब्राहम कर दिया, जिसका अर्थ है बहुतों का पिता (उत्पत्ति 17:1-8)। सारे का अर्थ है मेरी राजकुमारी, परन्तु परमेश्वर ने बदलकर उसका नाम राजपुत्री अर्थात सारा रख दिया (उत्पत्ति 17:15-16)। एसाव के भाई का नाम एड़ी पकड़ने वाला या चालबाज रखा गया, जिसे हम याकूब के नाम से जानते हैं जिसने स्वर्गदूत के साथ मल्लयुद्ध किया था और उसने उसका नाम बदलकर इस्राएल रख दिया, जिसका अर्थ है परमेश्वर से युद्ध करके जीत गया। (मत्ती 32:22-32)। यीशु ने शमौन जिसका अर्थ सुनना है, से बदलकर पतरस रख दिया, जिसका अर्थ है पत्थर (यूहन्ना 1:40-42)।

बेशक हमारे प्रभु को जो नाम मिलने वाले थे, उन्हें लम्बे समय से संभालकर रखा गया था और उनका अर्थ बहुत ही बड़ा है। स्वर्गदूत ने यूसूफ को बताया वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा। (मत्ती 1:21)। आयत 23 में स्वर्गदूत ने यशायाह 7:14 का हवाला देते हुए कहा, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा, जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ। उसे मसीह कहा जाता है, क्योंकि वह परमेश्वर का अभिषिक्त है। हम उसे प्रभु कहते है, क्योंकि हमारे जीवन पर उसका सर्वोच्च अधिकार होना आवश्यक है (रोमियों 7:24-25; 1 कुरिन्थियों 6:19-20)। रोमियों 10:9 में कहा गया है, यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे। धार्मिक जगत में बहुत से लोग यीशु को उस नाम के सिवाय जो वचन में मिलता है, किसी अन्य नाम से पुकारना नहीं चाहेंगे।

यशायाह 62:1, 2 में यशायाह ने पहले से उस दिन को देख लिया जब प्रभु की धार्मिकता और उद्धार यरूशलेम में से निकलना था। उस समय अन्य जातियों, देशों ने प्रभु की धार्मिकता को सुना था और परमेश्वर के लोगों को एक नया नाम मिला था। नये नियम के पवित्र शास्त्र से पता चलता है कि अंताकिया में पहली कलीसिया थी जिसमें यहूदी और यूनानी दोनों थे। कितना महत्वपूर्ण है कि उसी जगह पर कभी चेलों को मसीही कहा जाने लगा (प्रेरितों 11:26)। पौलुस ने राजा अग्रिप्पा को भी मसीही बनाने का प्रयास किया था और पतरस ने चेलों को प्रोत्साहित किया था कि यदि वे मसीही होने के कारण दुख उठाएं तो इस नाम के कारण परमेश्वर को महिमा दें (प्रेरितों 26:28; 1 पतरस 4:16)। हम में से हर कोई इससे सहमत होगा कि नाम मसीही स्वीकार किए जाने के योग्य ही था। फिर हम अन्य सब नामों को छोड़कर केवल मसीही ही क्यों नहीं कहलाते?

यीशु का बपतिस्मा

इससे पहले कि यीशु परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना आरंभ करता तो उसने बपतिस्मा लिया था। सुसमाचार की चारों पुस्तकों में यीशु के बपतिस्मा का उल्लेख है। इस संबंध में हम यहां मत्ती 3:13-7 पर विचार करेंगे।

सबसे पहली बात हम यह देखते हैं कि यीशु स्वयं यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पास आया ताकि वह उसे बपतिस्मा दे सके। परन्तु क्यों?

मत्ती 3:15 में यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से कहा था, ''अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। भजन 119:172 में दाऊद ने कहा था, तेरी सब आज्ञाएं धर्ममय हैं। यीशु ने अपने पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए बपतिस्मा लिया था। इसी बात पर जोर देते हुए यूहन्ना 6:38 में यीशु ने कहा था, क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूं। यीशु ने इसलिए भी बपतिस्मा लिया था ताकि वह अन्य सब लोगों के लिए एक नमूना दे सके। पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों के विषय में कहा था कि वे वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे (1 थिस्सलुनीकियों 1:6)। यदि वह प्रभु का अनुसरण कर रहे थे तो उन्होंने बपतिस्मा भी अवश्य लिया होगा। यीशु ने पिता परमेश्वर की आज्ञाओं को माना और हमें सिखाया कि परमेश्वर की हर आज्ञा को मानना हमारा कर्त्तव्य है। उसने यूहन्ना 9:4 में कहा, जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है।

यीशु ने इस बात का उदाहरण भी हमारे सामने रखा कि जिन बातों को वह सिखाता था उन्हें स्वयं भी मानता था। यूहन्ना 3:5 में उसने कहा था, मैं तुझ से सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। इसी प्रकार मरकुस 16:16 में यीशु ने कहा था कि जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।

यीशु ने अपने मसीह होने के प्रकट करने के लिए ही बपतिस्मा लिया था। यूहन्ना 1:21 में हम पढ़ते हैं कि यूहन्ना बपतिस्मा लेने वाले ने इस प्रकार से कहा था, तो फिर कौन है? क्या तू एलिय्याह है? उसने कहा, मैं नहीं हूं। तो क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है? उसने उत्तर दिया नहीं। और अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए भी यीशु ने बपतिस्मा लिया। क्योंकि 3:17 में हम ऐसा पढ़ते हैं कि जैसे ही यीशु बपतिस्मा लेकर पानी में से ऊपर आया तो यह आकाशवाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं। क्या आपने कभी इस पर गंभीरता से विचार किया है कि परमेश्वर ने यीशु को बपतिस्मा लेने के बाद ही अपना पुत्र क्यों घोषित किया? इसमें ही कोई विशेष बात होनी चाहिए।

अब यीशु के बपतिस्मे के विषय में इस पाठ में हम कुछ और बातों पर विचार करते हैं। सबसे पहली बात हम यह देखते हैं कि जो बपतिस्मा यूहन्ना क्रूस पर यीशु की मृत्यु होने से पहले देता था, उसे लेने से पहले मसीह पर विश्वास लाने के लिए कहा जाता था। प्रेरितों 19:4 में हम पढ़ते हैं कि यूहन्ना ने यह कहते हुए मन फिराव का बपतिस्मा लिया कि जो मेरे बाद आने वाला है, उस पर यानी यीशु पर विश्वास लाना। इसी प्रकार से आज भी हम जब यीशु का बपतिस्मा लेते हैं तो बपतिस्मा लेने से पहले यीशु पर विश्वास लाना आवश्यक है, क्योंकि मरकुस 16:16 कहता है कि जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।

यूहन्ना के बपतिस्मे के संबंध में दूसरी बात हमें यह मिलती है कि बपतिस्मा लेने से पहले मन फिराना आवश्यक था। मत्ती 3:8 बताता है कि जब यूहन्ना ने लोगों को बपतिस्मा लेने के लिए अपने पास आते देखा तो उसने उनसे कहा था कि, मन फिराव के योग्य फल लाओ। आज भी बपतिस्मा लेने से पहले मन फिराना आवश्यक है, जैसे कि पतरस ने प्रेरितों 2:38 में लोगों से कहा था, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।

तीसरी बात यूहन्ना के बपतिस्मे के संबंध में हम यह देखते हैं कि बपतिस्मा लिए जाने से पहले अंगीकार करना आवश्यक था। मत्ती 3:6 बताता है कि उन्होंने अपने अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया। अब आज भी जब लोग मसीह का बपतिस्मा लेते हैं तो बपतिस्मा लेने से पहले उन्हें अंगीकार करना आवश्यक है। बेशक यह अंगीकार अपने पापों का नहीं बल्कि इस बात का है कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है। क्योंकि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है (रोमियों 10:9, 10)। खोजे के मनपरिवर्तन के संबंध में हम पढ़ते हैं कि मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है? फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है, उसने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया। (प्रेरितों 8:36-38)।

चौथी बात हम देखते हैं कि यूहन्ना का बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए था मरकुस 1:4 बताता है, यूहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा के लिये मनफिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था। आज क्रूस पर यीशु की मृत्यु के बाद भी परमेश्वर की योजना में कोई बदलाव नहीं आया है, क्योंकि प्रेरितों 22:16 में हम पढ़ते हैं कि हनन्याह ने शाऊल के पास जाकर उससे कहा था कि, अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल।

अन्त में हम देखते हैं कि यूहन्ना जो बपतिस्मा यीशु की मृत्यु से पहले देता था और जो बपतिस्मा उसकी मृत्यु के बाद उसके चेले देते थे, दोनों में अंतर था। इस संबंध में हम देखते हैं कि यूहन्ना का बपतिस्मा लेने से पवित्र आत्मा का दान नहीं मिलता था, परन्तु मसीह का बपतिस्मा लेने से मिलता था (प्रेरितों 2:38)। यूहन्ना का बपतिस्मा किसी भी नाम से नहीं दिया जाता था। परन्तु मसीह का बपतिस्मा मसीह के नाम में दिया जाता था (मत्ती 28:19; प्रेरितों 2:38)। यूहन्ना का बपतिस्मा इसलिए दिया जाता था ताकि लोग वह बपतिस्मा लेकर अपने आपको आने वाले राज्य में प्रवेश के लिए तैयार कर सकें। लूका 1:17 यूहन्ना के विषय में कहता है कि वह प्रभु के लिए एक योग्य प्रजा तैयार करने के लिए था। परन्तु मसीह की मृत्यु के बाद अब उसका बपतिस्मा लेकर लोग उसके राज्य में अर्थात उसकी कलीसिया में आते जाएं (यूहन्ना 3:5; प्रेरितों 2:38, 41, 47, 1 कुरिन्थियों 12:13; गलातियों 3:27)।

मसीही लोगों के लिए उपवास रखना आवश्यक है या उनकी इच्छा पर है?

यीशु ने कहीं पर भी अपने चेलों को उपवास रखने की आज्ञा नहीं दी। इसका अर्थ यह हुआ कि उपवास रखना किसी की अपनी व्यक्तिगत इच्छा पर निर्भर करता है। बेशक मत्ती 9:14-18 (मत्ती 9:14-17 और समानांतर वचन लूका 5:33-39) में यीशु के शब्दों का अर्थ यही प्रतीत होता है कि कुछ परिस्थितियों में मसीही लोग उपवास रखेंगे।

यूहन्ना के चेले यीशु से इसका कारण पूछने के लिए आए कि फरीसी और वे तो उपवास रखते थे परन्तु यीशु के चेले उपवास क्यों नहीं रखते। उसने उत्तर दिया, क्या बाराती जब तक दूल्हा उनके साथ है, शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आएंगे जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे (मत्ती 9:15)। यीशु ने यहां संकेत दिया कि (1) उपवास का संबंध शोक से है और (2) जब यीशु अपने चेलों के साथ था तो यह उनके लिए शोक करने का समय नहीं था।

परन्तु यीशु ने जोर देकर कहा कि वे दिन आएंगे जब दूलहा उनसे अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे। दूल्हा उनके साथ ही है, इसका अर्थ स्पष्ट है कि जब तक यीशु अपनी सेवकाई (निजी) के दौरान शारीरिक रूप में उनके साथ था। इस लिए जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा का अर्थ अवश्य ही उसके स्वर्ग पर जाने के बाद का समय होना था। यदि ऐसा है तो यीशु उन्हें कह रहा था कि उसके चेलों के लिए उपवास रखने का यही समय होना था।

बरनबास और शाऊल को मिशनरी बनाकर भेजे जाने के समय अंताकिया में कलीसिया ने उपवास रखा था (प्रेरितों 13:2, 3) और अपनी पहली मिशनरी यात्रा के दौरान पौलुस द्वारा आरंभ की गई कलीसियाओं ने ऐल्डरों की नियुक्ति करने के समय उपवास रखकर प्रार्थना की थी (प्रेरितों 14:23)।

उपवास रखना कई बार दुख के कारण भी हो सकता है (2 शमूएल 1:12; 12:16, 21-23; नहेम्याह 1:3-4)। उपवास कई बार उदासी का प्रदर्शन भी है जो पश्चाताप उत्पन्न करता है (2 कुरिन्थियों 7:10; 1 शमूएल 7:6; देखें योना 3:4-10)।

पहाड़ी उपदेश में यीशु ने उपवास से संबंधित निर्देश दिए थे (मत्ती 6:16-18)। यहां उपवास रखने की कोई आज्ञा नहीं है। यीशु अपने चेलों को सिखा रहा था कि उसके राज्य में उनके जीवन और आराधना कैसी हो। जब उपवास रखा जाए तो यह अपने तौर पर ही रखा जाए।

उपवास बहुत लम्बा नहीं हो सकता और हर बात में भी नहीं हो सकता। कुछ उपवासों में भोजन और पानी दोनों का ही त्याग करना हो सकता है। जबकि कुछ उपवासों में केवल भोजन का त्याग करना होता है। प्रायश्चित वाले दिन उपवास संध्या से संध्या तक यानी चौबीस घण्टे का होता था। फरीसी लोग सप्ताह में दो बार सुबह से लेकर शाम तक उपवास रखते थे तथा तीन दिन का उपवास और सात दिन का उपवास रखा जाना आम बात थी। इसके अलावा मूसा (निर्गमन 34:28), एलिय्याह (1 राजाओं 19:8) और यीशु (मत्ती 4:2) ने चालीस दिन और चालीस रात का उपवास रखा था।

क्या उपवास रखने से एक मसीही व्यक्ति को अधिक आत्मिक शक्ति और मजबूती मिलती है? हो सकता है। उपवास रखने का एक कारण यह भी हो सकता है कि भोजन का त्याग और जो समय खाने में लगाया जाना था उसे प्रार्थना करने और बाइबल अध्ययन में

लगाना। जो धन भोजन पर खर्च किया जाना था उसे किसी भले कार्य को करने के लिए भी खर्चा जा सकता है। उपवास रखने के समय जब भूखा पेट दिमाग को कुछ याद दिलाता है तो यह समझना आवश्यक है कि यह प्रार्थना करने को याद दिला रहा है। उपवास रखना विशेष तौर पर तब अधिक लाभदायक हो सकता है जब कोई आवश्यक विनती प्रार्थना में परमेश्वर के सामने करनी हो।

बेशक भोजन का त्याग करने का अर्थ यह नहीं कि उपवास रखने वाले की हर मांग पूरी हो जाए। उपवास से संबंधित जैसे आपके विचार और काम हैं, आपको उसी के अनुसार उसका उत्तर मिलेगा।

यशायाह ने कहा था कि उसके समय के लोग उपवास रखते हैं, परन्तु उपवास रखकर वे निर्धनों से छल करते, लड़ाई झगड़ों में लगे रहते और हर प्रकार की बुराई करते थे। जो उपवास परमेश्वर चाहता है, यशायाह ने बताया कि वह यह है कि अन्याय से बनाए हुए दासों और अंधेरे सहने वालों का जुआ तोड़कर उनको छुडा लेना, अपनी रोटी भूखों को बांट देना, अनाथ और मारे-मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना, और अपने जाति भाइयों को अपने से न छिपाना (यशायाह 58:3-9)।

यदि कोई मसीही व्यक्ति दुख में या परेशानी में है तो उसके लिए उपवास रखना स्वाभाविक बात है। यदि उपवास सोच-समझकर आत्मिक लाभ के लिए रखा जाता है तो आपकी प्रार्थना के लिए यह एक सहायक का काम कर सकता है। उपवास जब भी रखें, लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए न हो।

रिबका, इसहाक के लिये परमेश्वर का चुनाव

सूज़ी फ्रैड्रिक

सारे संसार में प्रतिदिन, हजारों लोग अपने लिये विवाह का चुनाव करते हैं। जीवन साथी चुनने के लिये तमाम संसार में विभिन्न प्रकार के रीति रिवाज़ों पर लोग चलते हैं। शायद किसी समाज में लोग कुछ विशेष बातों को मानते हो, परन्तु यह भी हो सकता है कि दूसरे समाजों में शायद उन बातों को महत्व नहीं दिया जाता। क्या आपने कभी यह सोचने का प्रयत्न किया है कि परमेश्वर को इस विषय में कौन-सी बातें पसन्द हैं? पुराने नियम में उत्पत्ति नामक पुस्तक हमें बताती है कि परमेश्वर ने इसहाक के लिये एक पत्नी का चुनाव किया था।

इस घटना का वर्णन हमें उत्पत्ति के 24 अध्याय में मिलता है। जिस व्यक्ति को पत्नी की आवश्यकता थी उसका नाम था इसहाक जो इब्राहिम का बेटा था। इब्राहिम जब 140 वर्ष का था तब उसने अपने एक भरोसेमन्द दास को इसहाक के लिये पत्नी तलाश करने को भेजा। अब्राहम ने अपने दास से कहा, ''परन्तु तू मेरे देश में मेरे ही कुटुम्बियों के पास जाकर मेरे पुत्र इसहाक के लिये एक पत्नी ले आएगा.... स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा जिसने मुझे मेरे पिता के घर से और मेरी जन्म-भूमि से ले आकर मुझ से शपथ खाई और कहा कि मैं यह देश तेरे वंश को दूंगा, वही अपना दूत तेरे आगे-आगे भेजेगा कि तू मेरे पुत्र के लिये वहां से एक स्त्री ले आए।'' (उत्पत्ति 24:4, 7)।

उसके दास ने इस बात को बड़ी गम्भीरतापूर्वक लिया। जब वह नाहोर शहर पहुंचा, उसने परमेश्वर से अपनी अगुवाई के लिये प्रार्थना की तथा इस बात की कामना की कि परमेश्वर उससे

क्या चाहता है। ''देख मैं जल के इस सोते के पास खड़ा हूं, और नगरवासियों की बेटियां जल भरने के लिये निकल जाती है: इसलिये ऐसा होने दे कि जिस कन्या से मैं कहूं, अपना घड़ा मेरी ओर झुका कि मैं पिऊं, और वह कहे, ले पी ले, पीछे मैं तेरे ऊंठों को भी पिलाऊंगी, यह वही हो जिसे तू ने अपने दास इसहाक के लिये ठहराया हो, इसी रीति से मैं जान लूंगा कि तू ने मेरे स्वामी पर करूणा की है।'' (13-14)। इससे पहिले कि वो दास अपनी बात को समाप्त करता, रिबका जो अब्राहम के भाई की पोती थी, कुंए के पास आई जिस प्रकार से दास ने प्रार्थना की थी उसने वैसे ही किया। वो दास इस बात को जान गया कि रिबका ही वो लड़की है जिसे परमेश्वर ने इसहाक की पत्नी होने के लिये चुना है। आईये अब रिबका के चरित्र को देखें, यह जानने के लिये कि किस प्रकार की लड़की को परमेश्वर ने चुना था? सबसे पहिले, हम यह देखते हैं कि रिबका ऐसे परिवार से थी जो केवल एक परमेश्वर में विश्वास करता था (पद 50-51)। यही कारण हो सकता है कि अब्राहम ने अपने दास को वहां भेजा ताकि वह उसके ही अपने लोगों में से उसके पुत्र के लिये पत्नी चुने। आज, यदि एक मसीही लड़का या लड़की अपने लिये जीवन साथी की तलाश करते हैं तो उनके लिये यह बहुत आवश्यक है कि वे एक मसीही (christian) को अपना जीवन साथी चुने और ऐसे व्यक्ति को चुने जिसका विश्वास एक जीवते परमेश्वर मे हो, एक ऐसा इन्सान जो आपकी स्वर्ग में जाने में सहायता कर सके, तथा ऐसा जीवन साथी जो आपके ध्यान को जीवते परमेश्वर से दूर न ले जाये। यदि चुनाव आपका अपना है तब आपको एक ऐसे साथी को चुनना है जो आत्मिक बातों मे रुचि रखता हो तथा आप दोनों का विश्वास एक हो। (1 कुरि. 9:5)।

दूसरी बात यह है कि रिबका का चरित्र पवित्र था। 16 पद में लिखा है कि ''वह कुंवारी थी, और किसी पुरुष से उसका कोई सम्बंध नहीं था'' अपने विवाह से पहिले उसने अपने जीवन को पवित्र तथा साफ़, सुथरा रखा हुआ था। आज परमेश्वर प्रत्येक मसीही लड़की से भी यही चाहता है। इब्रानियों 13:4 से हम सीखते हैं, ''विवाह सब में आदर की बात समझी जाए और बिछौना निष्कलंक रहे क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।'' परमेश्वर दो जनों अर्थात लड़के और लड़की के बीच शारीरिक सम्बंध को मान्यता तब ही देता है जब दोनों का विवाह हुआ है। अर्थात पति-पत्नी के रूप में।

तीसरी बात, हम यह देखते हैं कि रिबका आदर-सत्कार करने में बहुत बढ़कर थी। रिबका सुस्त लड़की नहीं थी। यद्यपि उसके परिवार में बहुत से नौकर थे (पद 59-61), तौ भी उसने यह कभी नहीं चाहा कि उसके दास या घर के नौकर सारा काम करें। जब रिबका अब्राहम के दास से मिली तब वह पानी से भरा हुआ घड़ा लेकर कुंए से लौट रही थी। दास को पानी देने के पश्चात उसने कहा, ''मैं तेरे ऊंटों के लिये भी तब तक पानी भर लाऊंगी, जब तक वे पी न चुके।'' (उत्पत्ति 24:19)। दस ऊंटों के लिये कुंए से पानी भर कर लाना कोई सरल कार्य नहीं था। जब अब्राहम के दास ने उससे कहा कि क्या वे उसके परिवार के यहां आज रात ठहर सकते हैं, इस पर उसने कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई बल्कि कहा कि हमारे यहां ठहरने के लिये बहुत स्वागत है तथा उसके ऊंटों के लिये भी काफ़ी भोजन उपलब्ध है। तब रिबका दौड़कर गई ताकि अपने परिवार वालों को यह सब बातें बताएं। पत्नियों के पास बहुत से कार्य करने के लिये होते है। प्रेरित पौलूस बूढ़ी स्त्रियों से कहता है, ''वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहे कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें। और संयमी, पतिव्रता, घर का कारोबार करने वाली, भली और अपने-अपने पति के अधीन रहने वाली हो, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाएं।'' (तीतुस 2:4-5)। इसहाक के लिये परमेश्वर ने एक ऐसी स्त्री को चुना था जो अपने घर में मेहमानों का आदर-सत्कार करने में थकती नहीं थी। बड़ी ही प्रसन्नता के साथ वह अतीथियों का स्वागत करती थी।

यदि आप भी परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहती हैं तथा यह चाहती है कि आपका पति आपसे प्रसन्न हो तो आप भी रिबका के उदाहरण को अपने जीवन में लेकर चलें।

(1) अपने पति की आत्मिक रूप से बढ़ने में सहायता कीजिये यह दिखाकर कि आप सच्चे जीवते परमेश्वर की सेवा करती है।

(2) अपने विवाह के लिये अपने को पवित्र बनाकर रखें।

(3) अतीथियों का स्वागत करें, प्रसन्नता के साथ दूसरों की सहायता करें, सुस्त न बनें। क्या आप में रिबका जैसी विशेषताएं हैं?

क्रूस के प्रदर्शन

जॉन स्टेसी

इब्रानियों 12:1-2 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "...वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें...।" यदि हम मसीह के क्रूस के ऊपर ध्यान दें तो उसमें हमें चार बड़ी ही मुख्य बातें नजर आती हैं।

सबसे पहले, मसीह के क्रूस में हम यह देखते हैं कि परमेश्वर पाप को कैसे देखता है। मनुष्य पापों को एक आकस्मिक घटना कहता है, परन्तु परमेश्वर के सामने वह एक घिनौनी वस्तु है। मनुष्य पाप को एक गलती कहता है, लेकिन परमेश्वर पाप को अंधकार कहता है। मनुष्य पाप को एक कमजोरी कहता है, परन्तु परमेश्वर उसे अपनी आज्ञा का उल्लंघन कहता है। परमेश्वर पाप से घृणा करता है। बाइबल कहती है, "जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; और पाप तो व्यवस्था का विरोध है।" और फिर इस प्रकार लिखा है, फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है। मसीह के क्रूस के द्वारा परमेश्वर ने पाप को नाश किया। 1 यूहन्ना 3:8 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "...परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रकट हुआ कि शैतान के कामों को नाश करे।"

दूसरा, मसीह का क्रूस मनुष्य को उसके असली चेहरे को दिखाता है। जो कुछ भी उसके चारों ओर घटा था, उससे हम यह देखते हैं कि जब मनुष्य ने अपने धार्मिक नकाब को ऊपर उठाया था तो नरक में उसकी आत्मा आग में जल रही थी। मत्ती 28:18 बताता है, "क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने उसे डाह से पकड़वाया है। मत्ती 27:23 में लिखा है, "परन्तु वे और भी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे, वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।" जिन लोगों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था, उनका वर्णन करके प्रेरितों 2:23 में पतरस इस प्रकार कहता है, उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मंशा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला। उन लोगों के पाप की विशालता को मत्ती 27:25 में लिखे इन शब्दों से देखा जा सकता है। उन्होंने कहा था कि इस का लोहू हम पर और हमारी संतान पर हो। सो जो कुछ क्रूस के आस-पास घटा था, उस सब से हम यही देखते हैं कि मनुष्य कितना पाप से भरा है, परन्तु परमेश्वर कितना महान है।

तीसरे स्थान पर मसीह के क्रूस में परमेश्वर के प्रेम को देखा जा सकता है। उसमें हमें परमेश्वर की महानता प्रत्यक्ष देखने को मिलती है। रोमियों 5:8 में पौलुस यूं कहता है, परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है कि जब हम पापी ही

थे, तभी मसीह हमारे लिये मरा। फिर इफिसियों 2:4 में पौलुस इस प्रकार कहता है, परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिससे उसने हम से प्रेम किया। परमेश्वर का प्रेम अनन्त प्रेम है। यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है और उसकी करूणा सदा की है (भजन संहिता 136:1)। यूहन्ना बड़े ही सरल परन्तु मजबूत शब्दों में लिखकर कहता है कि परमेश्वर प्रेम हैं (1 यूहन्ना 4:8)।

इस संबंध में अंतिम बात हम यह देखते हैं कि मसीह का क्रूस यह दिखाता है कि मनुष्य की आशा पूरी हो सकती है। मसीह के क्रूस के कारण अपने पापों की क्षमा प्राप्त करना मनुष्य के लिए अब एक वास्तविकता बन गई है। इफिसियों 1:7 में पौलुस कहता है, हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। ऐसे ही परमेश्वर के साथ मेल करने की आशा भी मसीह के क्रूस के द्वारा हमें मिली है। कुलुस्सियों 1:20 में पौलुस कहता है और उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा मेल-मिलाप करके। इसी के साथ, अंत में हम यह देखते हैं कि क्रूस के द्वारा मनुष्य की इस आशा को बल मिल गया है कि इस जीवन के बाद उसके लिए स्वर्ग में एक अनन्त स्थान है। फिलिप्पियों 3:20 में पौलुस ने बताया था, पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है।

परमेश्वर की सर्वशक्तिशालिता

रेमण्ड सी. केलसी

सर्वशक्तिशालिता

जब इब्राहीम निन्यानवे वर्ष का था, तो प्रभु ने उसे दर्शन देकर कहा था, मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूं, (उत्पत्ति 17:1)। इस नाम से परमेश्वर की शक्ति तथा सामर्थ का पता चलता है। इब्राहीम को एक वंश देने की प्रतिज्ञा करने और उस प्रतिज्ञा पर सारा के हंसने के बाद, परमेश्वर ने इब्राहीम से पूछा था, क्या यहोवा के लिए कोई काम कठिन है? (उत्पत्ति 18:14)। बाइबल के पन्नों पर तथा यीशु मसीह में देखकर परमेश्वर से मुलाकात करने वालों को दृढ़ता से इस प्रश्न का उत्तर देना चाहिए नहीं। परमेश्वर की सामर्थ उसके गुणों में स्पष्ट देखी जा सकती है। यीशु ने ऐलान किया था, परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है (मत्ती 19:26)। स्वर्गदूत ने मरियम को दर्शन देकर सूचित किया था कि परमेश्वर ने उसे प्रभु की माता होने के लिए चुन लिया है, और कहा, क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभाव रहित नहीं होता (लूका 1:37)।

आश्चर्यकर्मों से ही परमेश्वर की शक्तिशाली सामर्थ प्रमाणित हुई है। उसने आग से शद्रक, मेशक और अबेदनगो को हानि नहीं पहुंचाने दी। उसमें लाल सागर के पानी को दो भागों में बांट देने की, कुल्हाडी को चपडा करने की, तूफान को शांत करने की और पानी को स्वादिष्ट मय में बदलने की सामर्थ थी। शून्य से तत्व की सृष्टि उसकी असीमित शक्ति को दिखाती है। परमेश्वर के हाथ की कारीगरी तारों से भरे आकाश में दिखाई देती है; जो उसकी महिमा का वर्णन करते हैं। उसकी सामर्थ प्रकृति, इतिहास और मनुष्य के छुटकारे में देखी जाती है। ईश्वरीय सामर्थ का सबसे बड़ा प्रदर्शन यह था जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दहिनी ओर बैठाया (इफिसियों 1:20)।

सर्वशक्तिशाली होने का परमेश्वर की सर्वव्यापकता और सर्वज्ञता से गहरा संबंध है। यह तथ्य कि वह हर जगह है, उसे सब कुछ जानने और हर जगह कार्य करने के योग्य बनाता है। परमेश्वर योग्य, सम्पन्न तथा हर काम करने में समर्थ है। वह सृष्टि का स्वामी होने के साथ-साथ सर्वशक्तिमान भी है, अर्थात सृष्टि उसके नियंत्रण में है। जो कुछ भी करने की आवश्यकता हो वह सब कुछ करने

में समर्थ है। उसकी सामर्थ मानवीय इतिहास में किए उसके कार्यों से कहीं बढ़कर है। उसका स्वभाव तथा चरित्र जैसा भी करने के लिए कहे और उसकी सृष्टि जैसी भी मांग करे, वह सब प्रकार से कार्य करता है।

मानवीय भाषा में परमेश्वर का वर्णन

बाइबल के कुछ पद इस पाठ की बातों से थोड़े अलग लगते हैं। यदि परमेश्वर हर जगह है, तो धर्म शास्त्र में उसे आते या जाते क्यों कहा गया है, जैसे वह कोई मानवीय जीव हो? हमें बताया गया है कि वह बाग-ए-अदन में चलता था, वह बाबुल की मीनार बनने के समय नीचे उतरा था, उसने कई लोगों को दर्शन दिया, और वह करूबियों के बीच सिय्योन में निवास करता था। हम इन बातों की इन तथ्यों से व्याख्या कर सकते हैं कि, परमेश्वर स्थानीय परमेश्वर तो नहीं है, परन्तु दिखाई वह स्थानीय रूप से ही देता रहा है। फिर, हमें यह भी पता होना चाहिए कि स्थान से परमेश्वर के संबंध की बात बहुत ही सांकेतिक रूप में कही गयी है। यह कहना कि परमेश्वर मनुष्य को प्रतिफल या दण्ड देने के लिए दूर से आता है, ईश्वरीय कार्यों की व्याख्या के लिए मानवीय शब्दावली का इस्तेमाल करना है। विद्वान लोग ऐसी सांकेतिक अभिव्यक्तियों को एन्थरोपोमोरफिज्म्स, अर्थात मानवीय शब्दों में मानवीय जीवों को परमेश्वर द्वारा अपने आपको प्रकट करना चाहते हैं।

जिन पदों में परमेश्वर के शारीरिक अंग होने या मानवीय काम करने की बात कही गई है, उनमें भी यही बात सत्य है। उसका चेहरा, आंखें, नथुने, भुजाएं और पांव होने की बात कही गई है। उसके मीठी सुगंध लेने, हंसने, पछताने और अन्य देवताओं से ईर्ष्या करने की बात कही गई है। हमें चाहिए कि इन्हें अक्षरश: न समझें। परमेश्वर के किसी भी गुण या विशेषता को मनुष्य की ही भाषा में बताया जाना चाहिए ताकि वह उसे समझ सके और हमें चाहिए कि ऐसी अभिव्यक्तियों को हम सामंजस्य वाली भाषा के रूप में देखें। परन्तु इन सांकेतिक शब्दों का अर्थ यह भी है कि ईश्वरीय व्यवहार में मानवीय गुणों और कार्य की कुछ समानता भी है, जिन पर ये बातें आधारित है। इन बातों को लिखने वालों ने अक्षरश: नहीं लिया। यदि वे इन्हें अक्षरश: लेते, तो तो वे यह मान रहे होते कि परमेश्वर के पंख हैं और वह एक पेड़ है जिसकी शाखाएं फैलती हैं, क्योंकि उन्होंने उसका चित्रण इन शब्दों में भी किया।

व्यावहारिक महत्व

परमेश्वर के असीमित होने से परमेश्वर की संतान को काफी सांत्वना तथा संतुष्टि मिलती है। परमेश्वर हर जगह होने के कारण, मुझ में है और मेरे पास है। अपने समय के एक प्रसिद्ध नास्तिक एनथनी कोलिन्ज की मुलाकात एक सीधे-साधे गंवार से हो गई जो आराधना करने के लिए जा रहा था। तुम सर्च क्यों कर रहे हो? कोलिन्ज पूछने लगा। उत्तर मिला, परमेश्वर की आराधना करने। जिस परमेश्वर की तुम आराधना करते हो वह बड़ा है या छोटा परमेश्वर? कोलिन्ज ने मजाक में पूछा। उसे अनापेक्षित उत्तर मिला श्रीमान जी, वह इतना बड़ा है, कि आकाशों के आकाश भी उसे अपने में समेट नहीं सकते, और इतना छोटा है कि वह मेरे हृदय में रह सकता है। कोलिन्ज ने बाद में कहा कि उसके मन पर परमेश्वर के बारे में इस सरल परन्तु प्रभावशाली उत्तर ने प्रभु के विरोध में लिखी गई विद्वानों की बड़ी-बड़ी पुस्तकों से अधिक प्रभाव डाला।

परमेश्वर मेरे भीतर है, वह हर जगह मेरी सहायता करने और हर दुख और कष्ट से बचाने के लिए मेरे पास है। प्रभु निकट है। किसी भी बात की चिंता मत करो (फिलिप्पियों 4:5, 6)। हम हमेशा अपने पिता की नजरों में रहते हैं; हम उसके साथ वास्तविक तथा व्यापक सहभागिता का आनन्द कहीं भी ले सकते हैं।

यदि हम परमेश्वर के निकट रह रहे हैं, तो उसक बड़ा ज्ञान हमारे लिए सांत्वना देने वाला है। वह सब को जानता है, मुझे और मेरी आवश्यकताओं को भी जानता है। वह मेरे बोझों, मेरी परीक्षाओं और मेरे कष्टों को भी जानता है। वह मेरे हंसने, मेरे रोने, मेरे दुखों और आनन्द को, मेरे कष्ट और मेरी प्रसन्नता को जानता है। वह मेरे मांगने से पहले ही जानता है कि मुझे किस चीज की आवश्यकता है।

परमेश्वर सर्वशक्तिशाली है, इसलिए वह मेरी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने में सामर्थ है। वह सब कुछ कर सकता है और मेरी ओर से अपनी महान सामर्थ का इस्तेमाल करने को तैयार है। वह प्रार्थना का उत्तर देने के साथ-साथ हमें यह आश्वासन भी दे सकता है कि वह ऐसा ही करेगा। हमारा परमेश्वर ऐसा सामर्थी है कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है, (इफिसियों 3:20)।

परमेश्वर की असीमितता से कई लोगों को राहत मिलती है, जबकि कइयों को यह बात आतंकित करती है। परमेश्वर हर जगह है, सब कुछ जानता है, और उसके पास सारी सामर्थ होने की ऐसी महान सच्चाइयां है जिन्हें दुष्ट व्यक्ति किसी भी प्रकार मानना नहीं चाहता। युगों-युगों से, लोग परमेश्वर से भागने की कोशिश करते रहे हैं। भागने का हर प्रयास वैसे ही मूर्खता भरा है जैसे पहली बार आदम और हव्वा ने अदन में अपने आपको छुपाया था (उत्पत्ति 3:8)। परमेश्वर से दूर भागने की कोशिश वैसे ही व्यर्थ है जैसे योना के लिए परमेश्वर की उपस्थिति से दूर भागने की थी (योन 1:3)। आज बहुत से लोग यह नहीं मानेंगे कि वे परमेश्वर से दूर भागने की कोशिश कर रहे हैं, परन्तु उनके जीवनों के आचरण से स्पष्ट दिखाई देता है कि वे परमेश्वर से दूर भाग रहे हैं।

संदेह करके या परमेश्वर के अस्तित्व का इंकार करके हम उससे भाग नहीं सकते। नास्तिकों के लिए खोज बहुत बड़ी बात है, और जब तक कोई बात गणित से प्रमाणित न हो जाए, वे उसको नहीं मानते हैं। एक नास्तिक कहता है, मैं नहीं मानता कि परमेश्वर है भी या नहीं। दूसरे लोग, व्यक्तिगत आनन्द हेतु खाने, पीने और भोगविलास में लोग रहने की फिलॉसफी को मानते है। वे पूछते हैं वह जीवन तो एक ही बार मिलता है, तो फिर यह सब क्यों न करें? कुछ लोग जो ऐसा करते हैं वे नीच तथा गिरे हुए हैं; दूसरे लोग कानून का पालन करने वाले नागरिक तो हैं परन्तु दोनों ही परमेश्वर के बिना होने के कारण, अधर्मी है। हम में से ऐसे अधिकतर लोग न तो आस्तिक हैं और न ही धार्मिक। वे समाज के औसत लोग हैं जो कभी बाइबल नहीं पढ़ते, केवल किसी बड़े कष्ट के समय ही प्रार्थना करते हैं, और किसी बड़े अवसर पर ही आराधना में जाते हैं। वे प्रभु के दिन को केवल व्यक्तिगत आनन्द तथा मनोरंजन का दिन मानते हैं। आस्तिक लोग कहते तो हैं कि परमेश्वर है, परन्तु इनमें से अधिकतर लोगों का जीवन ऐसा है जैसे वे कह रहे हों कि परमेश्वर है ही नहीं। परमेश्वर से दूर भागने या उसकी उपेक्षा करने के मनुष्य के प्रयासों के बावजूद, परमेश्वर तो है ही।

सामान्य की तरह, संसार अव्यवस्थित है। हमारी समस्याएं, जिनका बहुत से बुद्धिमान लोग अंगीकार करते हैं कि वे उनका उत्तर नहीं दे सकते, प्रत्येक वर्ष बढ़ती ही जा रही है। फिर भी हमारी छोटी-छोटी लड़ाइयों तथा तुच्छ झगड़ों के होने पर भी परमेश्वर तो है।

भजन लिखने वाले ने एक बार अपनी परीक्षाओं से भागने का विचार किया।

भला होता कि मेरे कबूतर के से पंख होते
तो मैं उड़ जाता है और विश्राम पाता।
देखो, फिर तो मैं उड़ते-उड़ते दूर निकल जाता
और जंगल में बसेरा लेता
मैं प्रचण्ड बयार और आंधी के झांके से बचकर
किसी शरण स्थान में भाग जाता
(भजन संहिता 55:6-8)।

निश्चय ही, यदि दाऊद को पंख दिए गए होते और वह जंगल में उड़ जाता, परन्तु वहां भी समस्याएं उसे घेरे रहती और परमेश्वर वहां भी होता। इसी दाऊद ने, भजन 139 लिखते हुए परमेश्वर की महिमा का मनन किया और उसकी असीम महानता का गीत ऐसे गाया कि सदियों बाद आज भी वह हमारे हृदय को छू लेता है।